मेड़ता के ऐतिहासिक महत्व की विवेचना

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग में पी.एच.डी. की उपाधि हेतु

शोध प्रस्तावना

निर्देशक

शोधार्थी

रवि प्रकाश

ENROLLMENT NO. : **JVR-II/22/11074**

मानविकी एवं समाजशास्त्र विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय जयपुर

अनुक्रमणिका

1.शोध परिचय

2.शोध अध्ययन की आवश्यकता

3.शिक्षा की परिभाषाएं

4.शोध समस्या

5.तकनीकी शब्दावली

6.शोध विधि

7.शोध के चर

8.शोध के उद्धेश्य

9.परिकल्पना

10.अध्ययन में अपनाये जाने वाली विधि

11.शोध का परिसीमन

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शोध एवं परिचय

मेड़ता नगर राजस्थान राज्य के मध्यवर्ती नगर जोधपुर से 100 मील दूर है। यह लगभग सन् 1460 में स्थापित हुआ। मेड़ता प्रसिद्ध कृष्ण भक्त –कवयित्री मीरां बाई का जन्म स्थान माना जाता है। मेड़ता नगर 8 वीं शताब्दी में प्रतिहार कालीन राजा नागभट्ट प्रथम की राजधानी भी रहा है। तब इस शहर का नाम मेडन्तक था। यहॉ जैन समाज की अधिकता होने पर इसे मेदिनीपुर के नाम से पुकारा गया।

यह शहर पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल है। यहॉ स्थित चार भुजा मंदिर के नाम से मशहूर मीरां बाई का मंदिर है। इसके अलावा मीरां बाई मेमोरियल व औरंगजेब मस्जिद वास्तुकला का बेहतरीन नमूना है।

शोध अध्ययन की आवश्यकता

मेङता के ऐतिहासिक महत्व की विवेचना पर अभी तक विस्तृत और गहराई से शोध नहीं हुआ है। यह शोध मेङता को विश्व पटल पर दर्शानें में कारगर साबित होगा।

1. मेङता के ऐतिहासिक महत्व की विवेचना पर अभी तक विस्तृत और गहराई से शोध नहीं हुआ है।
2. इस पर शोध करने से मेङता के ऐतिहासिक परिदृश्य को विश्व पटल पर लाया जा सकेगा और उसको वर्तमान में सांमजस्य बैठाकर नवीन योजनायें बनानें में मदद मिलेगी।
3. इन पर शोध करने से मेङता के ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक व राजनैतिक जीवन को समझनें में मदद मिलेगी।

मानविकी एवं समाजशास्त्र की परिभाषा

मानविकी एवं समाजशास्त्र एक ऐसी सामाजिक एवं गतिशील प्रक्रिया है जो एक व्यक्ति के अन्दर मौजूद जन्मजात गुणों का विकास कर व्यक्तित्व को पूर्णता प्रदान करती है, और मानविकी एवं समाजशास्त्रीय वातावरण के साथ समायोजन स्थापित करने की योग्यता विकसित करती है।

मैक्स वेबर के अनुसार, ''समाजशास्त्र वह विज्ञान हैं जो सामाजिक क्रिया के व्याख्यात्मक बोध को प्रस्तुत करने का प्रयास करता हैं जिससे उसकी प्रक्रिया व प्रभावों की बुद्धिसंगत व्याख्या की जा सकें।

गिंसबर्ग के अनुसार,''समाजशास्त्र मानवीय अंतक्रियाओं और अंर्तसंबधों उनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है।

शोध समस्या

मेड़ता के ऐतिहासिक महत्व की विवेचना

तकनीकी शब्दावली

मानविकी का अर्थ –

मानविकी वह शैक्षणिक विषय हैं जिनमें प्राकृतिक व सामाजिक विज्ञानों के मुख्यतः अनुभवजन्य बदलाव के विपरीत इसमें विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक विधियों का इस्तेमाल कर मानविकि का अध्ययन किया जाता है।

मानविकी अध्ययन का उद्धेश्य–

इसके अध्ययन से मानव का मानसिक विकास होता है और वह आगे चलकर मानवीय मुद्धे पूरे जोर तरीके से उठायेगा।

शोध विधि

शोध विधि से तात्पर्य एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन करने की प्रणाली से है। शोध अनुंसधान में कई अध्ययन विधियॉ प्रचलित है। इस शोध समस्या के लिए शोधकर्मी नें सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

सर्वेक्षण विधि–

सर्वेक्षण विधि में उन लोगों से प्रश्न पूछकर ऑकडें इकट्ठे कियें जाते है। जिनके बारे में माना जाता है कि उनके पास जानकारी है।

शोध के चर

शोधकर्मी अपनी समस्या से सम्बधित किसी व्यक्ति, वस्तु या घटना अंकित मूल्य रखने वाले गणों की विशेषता या योग्यता का करता है।

'' चर एक गुण है जिसके विभिन्न मूल्य है'' करलिंगर।

प्रस्तुत अध्ययन में दो प्रकार के चरों को शामिल किया गया है

1. प्राथमिक चर– प्राथमिक चर वे मूल आंकडें होते है जिसमें अनुसंधानकर्ता या उसके द्वारा नियुक्त प्रागणक, स्ंवय सकत्र शामिल होते है।
2. द्वितीय चर – द्वितीय आंकडे.प्रकाशित या अप्रकाशित स्त्रोत से प्राप्त होते है।

शोध के उद्धेश्य

मनुष्य जब किसी समस्या को हल करने के लिए सर्वप्रथम उद्धेश्य का निर्धारण करता है। उद्धेश्यहीनता से प्रयास दिशाहीन हो जाते है तथा परिश्रम, धन व्यय हो जाता है। अतः सार्थक प्रयास व बाधित परिणामों को प्राप्त करने के लिए स्पष्ट उद्धेश्य का निर्धारण किया जाता है।

1. मेङता के ऐतिहासिक महत्व पर शोध करने से वहॉ के धार्मिक विचारधारा की बातें निकलकर सामने आयेगी।
2. मेङता के ऐतिहासिक महत्व पर शोध करने से वहॉ की पर्यटन स्थल विश्वपटल पर उभरकर सामनें आयेंगें।
3. मेङता के ऐतिहासिक महत्व पर शोध करनें से वहॉ पर किये गयें राज परिवार के वंशजों की वंशावली पर अध्ययन किया जा सकेगा।
4. मेङता के ऐतिहासिक महत्व पर शोध करने से प्राचीन व मध्यकालीन राजनैतिक चिंतन को समझने में मदद मिल सकेगी।

शोध की परिकल्पना

मेङता नगर एक ऐतिहासिक धरोहर है। यह कालान्तर में राजस्थान का भू – भाग रहा है। यहॉ पर प्रतिहार शासकों ने शासन किया। उसके बाद लम्बे समय तक यह नगर राठौडों के अधीन रहा। राव जोधा ने मेङता को अपने पुत्र राव दूदा को जागीर के रूप में प्रदान किया। मेङता से दूदा के वंशज को मेङतिया राठौड. के नाम से पुकारा गया।

राव दूदा के बाद राव वीरमदेव ने शासन किया। कृष्ण भक्त मीरां बाई वीरमदेव की भतीजी थी। वीरमदेव ने खानवा के युद्ध में भाग लिया था। कुछ समय तक यह नगर मुगलों के भी अधीन रहा। यहॉ पर ऐतिहासिक धरोहर के रूप में कई ईमारतें मौजूद है।

<u>अध्ययन में अपनायें जाने वाली विधि</u>

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि को अपनाया जायेगा। जिसके माध्यम से शोधार्थी अपने ऑकडों एवं तथ्यों को विभिन्न पुस्तकालयों की पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर अपने शोध में मेड़ता के ऐतिहासिक महत्व की विवेचना का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें।

सर्वेक्षण विधि के माध्यम से तथ्यों को एकत्रित कर सकेगें।

शोध का परिसीमन

1. प्रस्तुत शोध में की मेङता के ऐतिहासिक महत्व की विवेचना पर अध्ययन किया जायेगा।
2. प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षणात्मक विधि का प्रयोग किया जायेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऐतिहासिक नगर मेङता कुंवर शक्ति सिंह खाखडकी
2. मीरां बाई और मेडता लेखक देवकिशन राजपुरोहित
3. सांस्कृतिक राजस्थान रानी लक्ष्मी कुमारी चुंडावत
4. राजस्थान का इतिहास गोपी नाथ शर्मा
5. मेड़तिया राठौड़ों का राजनीतिक और सामाजिक इतिहास डॉ. हुकमसिंह भाटी
6. मुरारीदान की ख्यात (मारवाड़ के शासक एवं राठौड़ शाखाओं का इतिहास) डॉ. विक्रमसिंह भाटी
7. मीराँबाई : प्रामाणिक जीवनी एवं मूल पदावली ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल